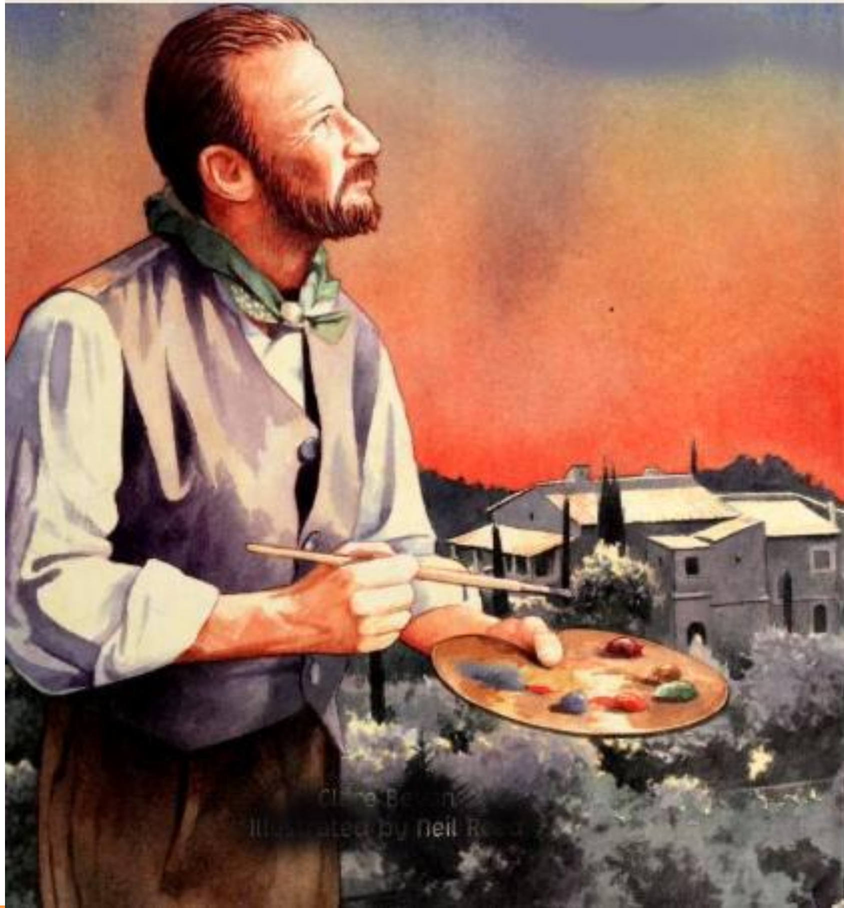
विन्सेंट वैन गॉग

की कहानी



विन्सेंट वैन गॉग

की कहानी



परिचय

विन्सेंट वैन गॉग का जन्म 1853 में नीदरलैंड में हुआ था. वो एक अच्छे उपदेशक और उनकी दयालु पत्नी के सबसे बड़े पुत्र थे. विन्सेंट को ताज़ी हवा और अपने आसपास के ग्रामीण इलाकों की धूप बहुत पसंद थी. उन्होंने ऋतुओं के बदलते रंगों को देखा, और उसने उनके मन को चित्रों से भर दिया.

सोलह वर्ष की उम्र में, विन्सेंट घर छोड़कर एक कला डीलर के लिए काम करने गए. नौकरी उन्हें पेरिस और लंदन ले गई, लेकिन उन्हें लगने लगा कि वो उस नौकरी में अपना समय बर्बाद कर रहे थे. शायद, उन्हें अपने पिता की तरह ही एक प्रचारक बनना चाहिए था ...



प्रार्थना और आलू



"अगर तुम वास्तव में एक उपदेशक बनना चाहते हो, तो तुम्हें लैटिन और ग्रीक सीखने की कड़ी मेहनत करनी होगी," शिक्षक ने विनम्रता से उन्हें समझाया. "यदि तुमने मेहनत करके सुधार नहीं किया तो तुम कभी भी परीक्षा पास नहीं कर पाओगे."

विन्सेंट ने एक आह भरी. उसे धार्मिक अध्ययन में बिलकुल मज़ा नहीं आया, और उसका प्रदर्शन भी खराब रहा. "लेकिन यीशु ने अच्छे काम किए, सिर्फ बातें नहीं कीं," उसने तर्क दिया. "मैं उनके जैसा बनना चाहता हूं. मैं अपना जीवन दूसरों के लिए समर्पित करूँगा."

बूढ़े टीचर ने अपना सिर हिलाया. "मुझे पता है कि तुम जीवन में कुछ अच्छा करना चाहते हो," उन्होंने कहा, "लेकिन तुम्हें यहाँ पर हमारे नियमों का पालन करना होगा. तुम्हें यहाँ जमकर पढ़ाई करनी होगी."

विन्सेंट वहां से चला गया. उसे यकीन था कि वह सही रास्ते पर था. उसे अपने सपनों को पूरा करने के लिए एक धुरंधर विद्वान होने की ज़रुरत नहीं थी.

अपनी परीक्षा में असफल होने के बाद भी विन्सेंट दृढ़ रहा. वो ज़रूर एक दिन अपने माता-पिता नाम रोशन करेगा.

और आखिर में उसे वो करने का मौका मिला.

विन्सेंट को बेल्जियम के गाँवों में स्थित खदानों में प्रचार करने के लिए भेजा गया. वहां पर लोग चूहों की तरह ज़मीन के अंदर रेंगते थे या फिर खेतों में से आलू खोदते थे.







"मैं अपने भाई को पत्र लिखूंगा," उसके भाई थिओ ने कहा, "मैं उसे याद दिलाऊंगा कि वो चित्रों की दुनिया और ताज़े पेंट की खुशबू से कितना प्यार करता था."

और विन्सेंट को याद भी आया. फिर निराशा के गड्ढे से खुदको बाहर खींचकर, उसे जो कुछ भी दिखा उसने वो चित्रित करना शुरू किया. और जैसा कि उसने पेंटिंग करना शुरू की उसे अपनी ताकत लौटती हुई महसूस हुई. मैं एक उपदेशक नहीं हूं, उसने सोचा. मैं एक कलाकार हूं. विन्सेंट को अब सही रास्ता मिल गया था - लेकिन वो रास्ता उतना आसान नहीं था.



विन्सेंट से ज्यादा किसी ने मेहनत नहीं की. किसी ने भी उतने घंटे काम नहीं किया. उसने उन भूखे परिवारों के साथ अपना सब कुछ साझा किया. वे परिवार ज़मीन के नीचे खतरनाक अंधेरे में काम करते थे. उसने उन्हें अपना भोजन, अपने कपड़े, यहाँ तक की अपनी ताकत का आखिरी हिस्सा भी उन्हें दिया.

वहां उसके बाल एक जंगली की तरह बढ़ गए, और वो खुद सूख कर काँटा हो गया. फिर वो हमेशा बीमार रहने लगा.

घर में, उसके परिवार को बहुत चिंता हुई.

"गरीब विन्सेंट," माँ ने कहा. "वह बहुत मेहनत करता है. हम उसे खुद से कैसे बचा सकते हैं?"

विन्सेंट, बोरिनज नामक खदान वाले जिले में रहा. खदान मज़दूर बहुत गरीब थे और उन्हें खाने भर के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी. महिलाओं और बच्चों को अपने घरों को गर्म करने के लिए कोयले के टुकड़ों को ढूंढना पड़ता था. और अक्सर उनका मुख्य भोजन गर्म आलू की एक डिश होती थी. बाद में, विन्सेंट ने "द पोटेटो ईटर्स" (आलू खाने वाले) नामक एक नाटकीय चित्र में उन भूखे लोगों की ज़िंदगी को दर्शाया.

काम करने की तकनीक

विन्सेंट एक कलाकार के रूप में सफल होने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ था. "अगर मैं कठिन अभ्यास करूंगा तो मैं कभी एक महान चित्रकार ज़रूर बनूँगा," उन्होंने खुद से वादा किया.

लेकिन ऐसा करने से पहले, उसके लिए उस कला के गुर सीखने ज़रूरी थे.

"मैं एक परिप्रेक्ष्य फ्रेम का उपयोग कर रहा हूं," उसने थियो को लिखा. "यह एक चतुर तकनीक है, जिससे पास और दूर की चीज़ों को मैं अधिक सटीक रूप से दिखा पाता हूँ. और अब मैं कलाकार एंटोन मौवे से भी सबक ले रहा हूं."

अगले कुछ वर्षों में, विन्सेंट ने उन चीजों को चित्रित किया, जिन्हें वो पसंद करता था. सर्दियों के आकाश के पृष्ठभूमि में मजनूँ (विलो) के पेड़ों की पतली शाखें, काई और घास से बुने पक्षियों के घोंसले; खदान मज़दूरों के गाँव और भूखे लोग, जिन्हे खाने को सिर्फ चंद आलू ही मिलते थे.

धीरे-धीरे करके उसके चित्र में सुधार हुआ. विन्सेंट और अधिक सीखने को तैयार हुआ. फिर वो एंटवर्प में कला विषय का छात्र बना. "मैं अतीत के चित्रकारों से सीखूंगा और अपनी खुद की महान कलाकृतियां बनाऊंगा," उसने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा.



लेकिन हमेशा की तरह, कुछ भी योजना अनुसार नहीं हुआ. "तुम्हारा पेंट बहुत मोटा है," शिक्षकों ने खीजते हुए कहा. "तुम बहुत जल्दी-जल्दी पेंट करते हो. और तुम यहाँ के नियमों का पालन नहीं करते हो."



फिर टीचरों ने उसे धीमे-धीमे, धैर्यपूर्वक, प्रत्येक छोटी चीज़ को एक नाजुक ब्रश के पेंट करना सिखाया. उन्होंने उसे पत्थर की मूर्तियों को स्केच करना भी सिखाया.

"अरे वाह!" फिर उन्होंने विन्सेंट से कहा, "बहुत सुन्दर चिकनी सतह. गज़ब का पीला रंग. हम चाहते हैं कि तुम इसी तरह पेंट करो."



"लेकिन मैं असली लोगों को पेंट करना चाहता हूं!" विन्सेंट ने विरोध करते हुए कहा. "मैं हर दिन एक नई ताजा तस्वीर पेंट करना चाहता हूं. मैं धूप में बाहर बैठना चाहता हूं और बादलों के गर्जन को चित्रित करना चाहता हूं, मैं पानी की चमक को पेंट करना चाहता हूँ."

विन्सेंट की बातें सुनकर अकेले में उनके शिक्षक कराह उठे. "विन्सेंट एक अच्छा कलाकार कभी नहीं बनेगा," उन्होंने कहा. "हमें उसे निचली क्लास में भेज देना चाहिए."

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. विन्सेंट ने पहले ही अपना बोरिया-बिस्तर बांध लिया था और वो पेरिस में अपने भाई थियो के साथ रहने जा रहा था.





परिप्रेक्ष्य की खोज के बाद, सैकड़ों साल से, कई कलाकारों ने विशेष रूप से उसका उपयोग किया. विन्सेंट को परिप्रेक्ष्य फ्रेम का उपयोग करना बहुत पसंद आया - उसने इस तकनीक का उपयोग वस्तुओं को पंक्तिबद्ध दिखाने और उन्हें करीब या दूर दिखाने के लिए बखूबी किया. पर जब वो चित्रों को इस तकनी के बिना बनाता था तो भी वो खुद को काफी गौरवान्वित महसूस करता था.

पेरिस में पेंटिंग



दो रोमांचक वर्षों के लिए, विन्सेंट ने दुनिया के कुछ महान चित्रकारों के साथ काम किया. वो जॉर्जस सेरात और हेनरी डी टूलूज़-लुट्रेक से मिला, जो हमेशा नए विचारों को आजमाने को तैयार रहते थे. वो लोग खुद उसके जैसे थे, जो वर्तमान के हर पल को चित्रित करना चाहते थे. "अब मैं जीवित कलाकारों से सीख सकता हूं - जो नियम तोड़ने से डरते नहीं हैं," विन्सेंट ने कहा.



उसने जापानी कलाकारों के काम की भी खोज की - जिनमें स्पष्ट पृष्ठभूमि के साथ बोल्ड, सरल आकृतियों वाले चित्र होते थे.

"मुझे उनकी बहावदार रेखाएं और मजबूत डिजाइन पसंद हैं," विन्सेंट ने खुद से कहा. "मुझे किसी तरह धन कमाकर अपने लिए वो संग्रह ज़रूर खरीदना है."



अब विन्सेंट ने अपने काम के लिए चमकीले, अधिक हंसमुख रंगों का चयन करना शुरू कर दिया. उन्होंने पवन-चक्कियों, और पेरिस की हलचल वाली सड़कों को चित्रित किया. उन्होंने मोटे ब्रश और फ्लैट चाकू से जल्दी और मोटे रूप से पेंट किया.

"चिकनी सतहों और हल्के रंग की किसे जरूरत है?" उन्होंने कहा, "जब जीवन शानदार रंगों से भरा है!"

पर अब दुबारा विन्सेंट के लिए आगे बढ़ने का समय आ गया था. "तुम्हें अब खुद के लिए एक स्थान की ज़रुरत है," उसने अपने भाई से कहा, "और मुझे अब अपने पंख फैलाने की ज़रुरत है."



रंग के छोटे डॉट्स से बने चित्रों को सेरेट चित्र कहते हैं. टूलूज़-लॉटरेक ने गायकों और नर्तकों को चित्रित किया और अद्भुत पोस्टर तैयार किए. दोनों लोग "इंप्रेशनिस्ट" नामक कलाकारों के एक समूह से ताल्लुक रखते थे. विन्सेंट वैन गॉग जैसे इम्प्रेशनिस्ट्स को भी ताज़ी हवा में, तेज़ी से पेंट करना पसंद था. पहले तो विशेषज्ञ उनकी तस्वीरों पर भड़के, लेकिन अब वे दुनिया के सबसे लोकप्रिय कलाकार हैं.

आरलेज़ में सूर्योदय



विन्सेंट का दिल आशा से भरा था, जब वो फ्रांस के दक्षिण में बेस आरलेज़ शहर जा रहे थे. उस समय वसंत का मौसम था, और चारों तरफ बाग-बगीचों में फूल खिले थे.

विन्सेंट ने अपना ब्रश संभाला और सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम किया. उसे वहां का बढ़िया मौसम और स्पष्ट प्रकाश बहुत पसंद आया. "यहाँ दिन में कभी भी पर्याप्त घंटे नहीं होते हैं," उसने अपने नए दोस्तों को बताया. "मैं हर पेड़, हर शाखा, हर फूल का चित्र बनाना चाहता हूं."

विन्सेंट अपने साथ जापानी चित्रों का संग्रह लाया था. उसने आरलेज़ के पेड़ों को उसी बहती शैली में पेंट किया. "मैं इनसे खुश हूँ." उसने खुद से कहा. "वे चित्र, उभरे हुए, उज्ज्वल और सरल हैं."

जब विन्सेंट ने सुना कि उसके पुराने शिक्षक एंटोन मौवे की मृत्यु हो गई , तो वो दुखी हुआ. फिर उसने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक तरीका सोचा. "मैं अपनी सबसे अच्छी पैंटिंग्स उनकी विधवा को भेजूंगा," विन्सेंट ने खुद से वादा किया. "मेरा गुलाबी आड़ू का पेड़, एक जापानी पैंटिंग की तरह है. वो शायद एक दिन यह उस विधवा को अमीर बना देंगे."

काम करते हुए विन्सेंट का आत्मविश्वास बढ़ा. उन्हें पता था कि उन्हें निरंतर अध्ययन और अभ्यास करना होगा, इसलिए जब भी उन्हें मौका मिला उन्होंने अपने मित्रों के पोर्ट्रेट्स बनाये : डाकिया; सैनिक; काले बालों वाली महिला जो कैफे में रहती थी आदि. और अगर मित्रों के पास समय नहीं होता, तो विन्सेंट खुद अपने आपको चित्रित करते थे!









अपने रंगों की पैलेट पर चटकीले रंग निचोड़ते हुए विन्सेंट सपना देखते थे. "एक दिन, मैं कलाकारों के एक समूह को यहां आरलेज़ में स्थापित करूंगा," उन्होंने थियो से कहा. "पेरिस के मेरे सभी पुराने दोस्त मुझसे यहाँ आकर जुड़ेंगे, और यह दक्षिण में मेरा स्टूडियो बन जाएगा. हम शुद्ध धूप में एक साथ काम करेंगे और एक-दूसरे को मास्टरपीस बनाने के लिए प्रेरित करेंगे. मैं उसके शुरू होने का इंतज़ार नहीं कर सकता!"



जापानी कला बहुत फैशनेबल और लोकप्रिय थी.
अमीर लोग अपने घरों को जापानी आभूषणों से सजाते थे.
विन्सेंट को जापानी वुडब्लॉक प्रिंट्स का अपना कलेक्शन बहुत पसंद था. वह उनकी नक़ल करना भी पसंद करते थे. उनमें से कई को उनके स्वयं के चित्रों की पृष्ठभूमि में देखा जा सकता है.

सूरजमुखी

देर से गर्मियों में, सूरजमुखी ने अपनी सुनहरी पंखुड़ियों को फैलाना शुरू कर दिया. जैसे ही उन्होंने अपना सिर सूरज की ओर किया, विन्सेंट की आँखें चमक उठीं. उनके दिमाग में एक आईडिया आया.

"मैं एक ऊँची इमारत में रह रहा हूँ जिसे मैंने "द येलो हाउस" का नाम दिया है," उन्होंने थियो से कहा. "पॉल गाउगिन, कलाकार, खुद मेरी तरह ही गरीब है. अगर मैं उसे अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित करता हूं, तो हम किराया साझा कर सकते हैं! उसके बाद जल्द ही अन्य कलाकार भी हमारे साथ जुड़ने के लिए प्रेरित होंगे. फिर अधिक-से-अधिक कलाकार यहाँ आएंगे."



फिर बहुत उत्तेजित होकर विन्सेंट अपने कमरे को सजाने लगा. "सूरजमुखी!" वह रोया. "मुझे उन्हें ज़रूर पेंट करना चाहिए. पीला रंग, जीवन के आनंद और ऊर्जा का रंग है. मैं अपनी दीवारों को खुशी के फूलों से ढँक दूंगा!"

दिन में विन्सेंट ने सूरजमुखी के विशाल खिले गुच्छों को चित्रित किया. रात को वो आरलेज़ के सूखे, कैफे को चित्रित करता था. घर के अंदर, कठोर रंगों की चकाचौंध, लपटों की तरह चमकती थी. पर बाहर, मेज़ों की ऊपरी सतहों पर तारों की रोशनी झिलमिलाती दिखाई पड़ती थी.





"दो विचार मेरे दिमाग के अंदर हमेशा लड़ते रहते हैं," विन्सेंट ने थियो को लिखा. "कभी-कभी मैं चीखना और चिल्लाना चाहता हूं क्योंकि मैं बहुत गरीब हूं. और कभी-कभी मैं खुशी में गाना चाहता हूं, क्योंकि दुनिया वाकई में बहुत सुंदर है."

अपने दिल में, वह चाहता था कि वो अपनी पेंटिंग्स से पैसा कमा सके. उनमें से कुछ पेंटिंग्स बेंचकर वो कर्ज चुकाना चाहता था. कुछ पेंटिंग्स से वो अपने घर को रोशनी से भरना चाहता था. उसकी बाकी पेंटिंग्स एक ढेर में पड़ी रहती थीं और इंतज़ार करती थीं उस वक्त का जब दुनिया उसके जीनियस को पहचानेगी.



अक्टूबर में, विन्सेंट ने अपने बेडरूम में एक तस्वीर पेंट की. वह जानता था कि वह कैसा होना चाहिए. उसने भाई को उसका एक स्केच भेजा. "मैं पूरे दृश्य को आराम और नींद में उंडेल दूँगा," उसने लिखा. "दीवारें बैंगनी और टाइलें लाल होंगी. बिस्तर की लकड़ी और कुर्सियाँ मक्खन की तरह पीली होंगी, और मेरे बंद कमरे में सब कुछ एक जापानी पेंटिंग की तरह शांत होगा."

फिर उसका घर उसके दोस्त गौगुइन के आगमन के लिए तैयार हुआ. विन्सेंट का सपना सच होने वाला था.



जब पेंट को मोटे ब्रशस्ट्रोक में पेस्ट की तरह इस्तेमाल किया जाता है, तो स्टाइल को "इम्पैस्टो" कहा जाता है. यह विन्सेंट की पसंदीदा पद्धति थी, क्योंकि इसने चित्रों में गहराई और और आंदोलन की भावना दिखती थी. कभी-कभी उसने पैलेट चाकू का इस्तेमाल भी किया, और कभी-कभी उसने कैनवास पर ट्यूब से सीधे पेंट को निचोड़ा!

दो कुर्सियां

जब पॉल गौगुइन आरलेज़ पहुंचा तो विन्सेंट बहुत खुश हुआ. वहाँ बहुत कुछ ऐसा था जो वो अपने दोस्त को दिखाना चाहता था - रात के कैफे, रोमन खंडहर, हरे बगीचे आदि.

उस समय पतझड़ का मौसम था, और दिन बड़े हो रहे थे.

विन्सेंट और गौगुइन ने बहुत देर रात तक बातें की, और शुरू में सब कुछ ठीक-ठाक लगा. कुछ असहमतियां जरूर थीं, लेकिन वो अपेक्षित थीं और सामान्य थीं.



" गौगुइन ने मेरा एक चित्र बनाया है," विन्सेंट ने अपने दोस्तों को गर्व से बताया. "उसमें उसने अपनी कल्पना का उपयोग किया है, और मुझे अपने सूरजमुखी के फूल के साथ दिखाया है, लेकिन ..."

फिर विन्सेंट भड़का, "लगता है उसने मुझे कुछ पागलों जैसे दर्शाया है!"

विन्सेंट को एक तस्वीर याद आई जो उसने बहुत साल पहले लंदन में देखी थी. वो चार्ल्स डिकेंस की खाली कुर्सी की एनग्रेविंग थी. वो एक बेहद सरल विचार था, किन्तु फिर भी वो बहुत कुछ कह रहा था.

"मैं दुनिया को दिखाऊंगा कि हम कैसे हैं," विन्सेंट ने कहा.

"गाउगिन और मैं खुद."



सबसे पहले उसने अपनी खुद की सादी लकड़ी की कुर्सी जो सुतली से बुनी थी को चित्रित किया. वो हंसमुख पीले रंग की थी, और उसके बगल में अंकुरित बीजों का एक डिब्बा पड़ा था. फिर उसने गौगुइन की सुरुचिपूर्ण, लाल कुर्सी को मुड़े हुए हाथों, किताबों और मोमबत्ती के साथ चित्रित किया.

फिर विन्सेंट और गौगुइन के बीच के रिश्ते बिगड़ते गए. वो छोटी-छोटी बातों पर असहमति व्यक्त करने लगे और लड़ने लगे.

यह लड़ाई धीरे-धीरे और भयंकर होती गई.



"तुम मोटा-मोटा और बहुत तेज़ पेंट करते हैं. और तुम्हें पीले रंग का बड़ा शौक है," गौगुइन ने शिकायत के लहज़े में कहा. विन्सेंट के कमरों में गंदगी और अव्यवस्था रहती थी जिसे देखकर गौगुइन थक गया था.

"आप बहुत ज़्यादा आविष्कार करते हो. आप अपनी याददाश्त पर भरोसा करते हो," विन्सेंट अपनी आलोचना को सुनकर चिल्लाया.

"और तुम्हें लाल रंग का बड़ा शौक है."

"अगर तुम्हें ऐसा लगता है तो मैं घर छोड़ सकता हूं," गौगुइन घुर्राया.

"नहीं!" विन्सेंट का दिल तेज़ी से धड़कने लगा.

"हम दोनों की एक टीम हैं. फिर दक्षिण के मेरे स्टूडियो का क्या होगा?"

"तुम नहीं जा सकते हो!"





"मुझे देखो!" और यह कहकर गौगुइन बगीचे में से बाहर निकल गया.

विन्सेंट की अपने आसपास की दुनिया बिखरती हुई लगी. "हर कोई मुझे छोड़कर जा रहा है," उसने सोचा. "थियो शादी करना चाहता है. अब मैंने गौगुइन को भी खो दिया है. यहां तक कि अब मेरे सपने भी ओझल हो रहे हैं."





विन्सेंट को मेज पर एक चाकू चमकता हुआ दिखा. उसने उसे एक हथियार की तरह पकड़ा. "मैं उन सबको दुःख पहुँचाऊँगा!" विन्सेंट रोया. और फिर क्रोध में उसने अपने बाएं कान का एक टुकड़ा काट डाला.

जब तक पोस्टमैन वहां आया तब तक विन्सेंट के कान से काफी खून बह चुका था और उसे अस्पताल ले जाना पड़ा. "येलो हाउस" कभी भी दक्षिण में विन्सेंट का स्टूडियो नहीं बन सका.



सारा जीवन विन्सेंट को किताबें पढ़ना पसंद था, और उनके पसंदीदा लेखकों में से एक थे चार्ल्स डिकेंस. "डेविड कॉपरफील्ड" की कहानियां एक्शन से भरपूर थीं, लेकिन उन्होंने गरीबी जैसे असहज विषय के बारे में भी बात की थी. विन्सेंट ने उसके बहुत प्रशंसा की.
जब उसे "द एम्प्टी चेयर" ल्यूक फील्ड्स की एंग्राविंग्स पर पुस्तक मिली तो उसने तुरंत उसकी एक प्रति खरीदी.

अस्पताल का बगीचा

थियो अपने भाई के बिस्तर के पास दौड़ा हुआ पहुंचा. जनवरी तक विन्सेंट की तबियत काफी ठीक हो गयी थी और अब वो खुद के चित्र पेंट कर सकता था. यह पेंटिंग आज भी देखी जा सकती है. उसमें विन्सेंट शांत दिख रहा है जबकि उसके मुंह की सफेद पट्टी कला प्रेमियों को उसके दर्द की याद दिलाती है.

अब वो फिर से सूरजमुखी के फूल पेंट करने लगा, वह भी सूरजमुखी के खिलते गुच्छे. लेकिन आरलेज़ के कुछ लोग अब उससे डरने लगे थे. "वह एक पागल आदमी है जो खुद को चाकू से काटता है," लोगों ने कहा. "आगे वो किस पर हमला करेगा?" इसलिए उसके बाद विन्सेंट, सेंट-रेमी के पास एक अस्पताल में रहने चला गया.



शुरू में उस जगह ने विन्सेंट को आतंक से भर दिया. वहां मरीजों के चेहरे खाली और बेजान थे. ऐसा लगता था जैसे उनके पास पूरे दिन खुद के दुःख में घूरने के अलावा कुछ और काम नहीं था.
लेकिन विन्सेंट कभी भी लंबे समय तक खाली बैठने वाला आदमी नहीं था. उसे डॉक्टरों, जंगलों और पत्तेदार बगीचों में शांति और दोस्त भी मिले. कुछ ही समय में, वह फिर से पेंटिंग करने लगा - नीले रंग के आईरिस फूल, टेढ़े-मेढ़े जैतून के पेड़, और हरे रंग की लपटें जैसे लंबे सरू (साईप्रस) के पेड़.





"मुझे लगता है कि विन्सेंट को प्रेरित करने के लिए उसे कुछ कुछ सुंदर चीज़ चाहिए," थियो ने अपनी नई पत्नी, जोहाना से कहा. "मैं उसे उसके पसंदीदा चित्रों की कुछ प्रतियां भेजूंगा. उसे गुस्ताव पोरे की, काली और सफेद नक्काशी और खेतों में काम करने वाले लोगों के चित्र बहुत पसंद हैं."
जब पैकेज पहुंचा, तो विन्सेंट रोमांचित हो गया. उसने कहा, "मैं इन्हें देखकर खुद के संस्करण बनाऊंगा. लेकिन मैं उन्हें गतिशील बनाऊंगा और उनमें ढेरों रंग भी डालूँगा!"





अस्पताल की उदास दीवारों के अंदर, विन्सेंट ने अन्य चित्रकारों के चित्रों में जीवन भरा. साथ में उन्होंने स्वयं के नए चित्र भी बनाये. "वर्षों से मैं, आधी रात के आसमान को रंगना चाहता था," जब वह अस्पताल के बगीचे में खड़ा था, तो वह बड़बड़ाया. "अब मेरे पास वो पेंट्स भी हैं और समय भी." उत्साह से भरकर उसने पेंट करना शुरू कर दिया - और जब तक "द स्टारी नाइट" खत्म नहीं हो गई, तब तक वो नहीं रुका.

विन्सेंट ने अपना ब्रश नीचे रखा और मुस्कुराया. भड़कीली रोशनी और विशाल पेड़ों ने उसकी तस्वीर को जंगली और रोमांचक बना दिया था. आकाश के नीचे गांव के घर और एक चर्च की चोंच थी जो उसे नीदरलैंड में अपने बचपन के घर की याद दिलाती थी.

हो सकता है कि एक दिन जल्द ही, वह अपनी बीमारी से बच जाए और बाहरी दुनिया में फिर से स्वतंत्रता प्राप्त करे.



विन्सेंट को अपने चहेते कलाकारों के काम की नकल करना भी पसंद था.

उसे मिलेट की पेंटिंग पसंद थी, क्योंकि उनमें लोग हमेशा इतने गौरवान्वित और प्रतिष्ठित दिखते थे, भले ही वे गरीब थे.

उसे डोरा की तस्वीरें भी पसंद थीं क्योंकि वो सुंदर दृश्यों के बजाय असामान्य इमारतों - जेल और लंदन की गंदी सड़कों को दिखाती थीं.

विजय का स्वाद



"विन्सेंट! तुम कभी अनुमान नहीं लगा पाओगे कि क्या हुआ!" थियो अपने भाई के लिए बेहद खुश था. वो विन्सेंट से मिलने के लिए सेंट-रेमी आया. "अल्बर्ट औरियर नामक एक व्यक्ति ने आपकी कुछ तस्वीरें देखी हैं. वह सोचता है कि वे अद्भुत हैं, और उसने उनकी एक अद्भुत समीक्षा लिखी है! देखें! आप जल्द ही प्रसिद्ध होने जा रहे हैं!"

विन्सेंट ने सिर हिलाया. "वह शायद उसकी दयालुता होगी. लेकिन गैलरी में मेरी तुलना में बहुत बेहतर पेंटिंग हैं." फिर भी, वो एक अच्छी खबर थी - और अच्छे समाचार अभी आने वाले थे. कुछ हफ्ते बाद, थियो एक पिता बन गया. "मेरी प्रिय जोहाना का अब एक छोटा लड़का है," थियो ने अपने भाई को लिखा. "और वे दोनों अच्छी सेहत में हैं!"

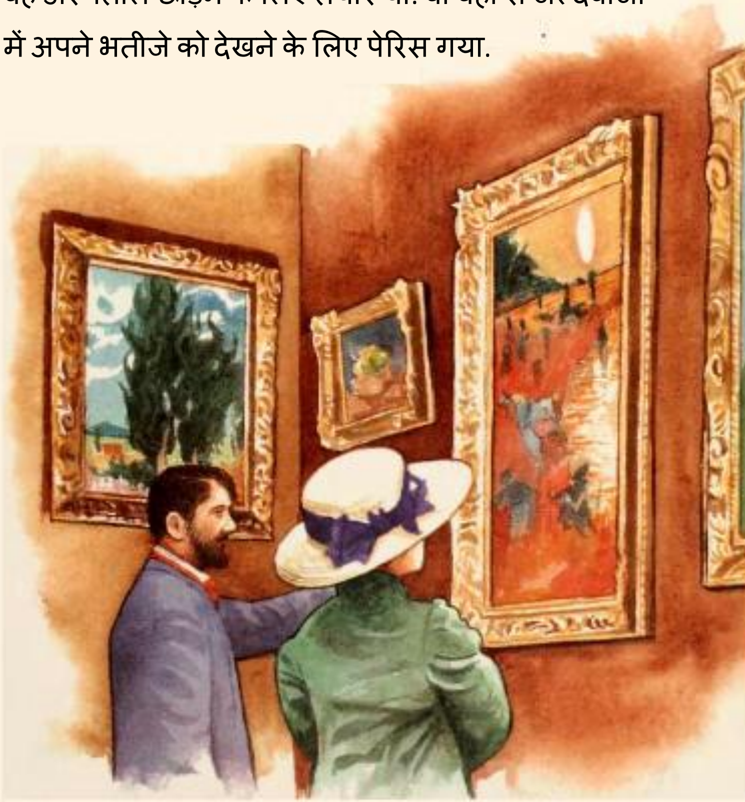


एक बार विन्सेंट को डर लगा कि कहीं जोहाना खुद उसके और थियो के बीच में न आ जाए. लेकिन जोहाना एक असामान्य व्यक्ति थी, वो ग़र्म जोश और बहुत समझदार थी. उसने और थियो ने अपने बच्चे का एक नाम चुना - विन्सेंट.



विन्सेंट खुश था. "यह मेरे लिए बड़े आदर की बात है," उसने अपने भाई को लिखा. "मुझे उम्मीद है कि मेरा छोटा भतीजा हमेशा खुश रहेगा. कृपया प्यारे जो की अच्छी देखभाल करें और अच्छी तरह से खाएं."

विन्सेंट फिर खुद से बीमार पड़ गया, लेकिन मार्च में सबसे अच्छा काम हुआ.
"मैंने आपकी एक पेंटिंग बेच दी है!" थियो ने खुशी से लिखा. "वो "द रेड वाइनयार्ड" है जो आपने आरलेज़ में पेंट की थी. आप बहुत जल्द ही एक अमीर व्यक्ति बन जाएंगे."
विन्सेंट को यह खबर सुनकर बेहतर महसूस हुआ. मई में, वह अस्पताल छोड़ने के लिए तैयार था. वो वहां से जल्दबाजी में अपने भतीजे को देखने के लिए पेरिस गया.



"विन्सेंट!" जोहाना खुशी से चिल्लाई . "आप थियो की तुलना में बहुत स्वस्थ और मजबूत दिखते हैं!" लेकिन, जैसे ही विन्सेंट अपने भाई के घर के पास गया, उसने आश्चर्य से अपनी आँखें झपकीं.

हर जगह उसे अपनी पेंटिंग ही दिखाई दीं. "द पोटैटो ईटर्स", "आरलेज़ के लैंडस्केप", और "ब्लोसोमिंग ओर्चार्ड्स" दीवारों पर सजी थीं. और बहुत सी पेंटिंग्स पलंग के नीचे और फर्नीचर के पीछे खड़ी थीं. जोहाना ने अपने बहनोई का घर में बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया.





पर तीन दिनों के बाद विन्सेंट उस सामान भरे घर को छोड़ने के लिए तैयार था. उसे अपना रास्ता खुद तलाशना था - और अब वो उत्तर में ऑवेर-सुर-ओइज़ नाम के छोटे से शहर में गया. वहां पर पॉल गचत नाम का एक दोस्ताना डॉक्टर रहता था. वह उसका इलाज करेगा.

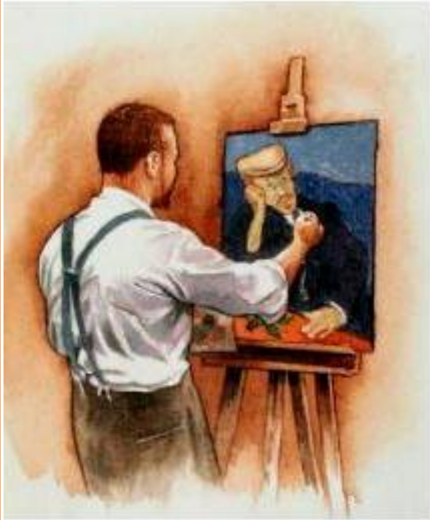


कुछ लोगों के अनुसार विन्सेंट ने अपने जीवनकाल में केवल एक पेंटिंग बेचीं. शायद थियो ने उसकी अन्य पेंटिंग भी बेंची हों. एक हेग के अंकल ने विन्सेंट के 12 स्केच खरीदे थे. विन्सेंट ने अक्सर अपने चित्रों का उपयोग अपने कर्ज का भुगतान करने के लिए किया! लेकिन थियो के पैसों के उदार उपहार के बिना, विन्सेंट बिल्कुल भी कामयाब नहीं हो पाता.

व्हीट-फ़ील्ड्स विद क्रोज

विन्सेंट में क्या गलत था? हो सकता है कि उसने खुद को बिल्कुल कमज़ोर बना लिया था. हो सकता है कि वो मिर्गी जैसी बीमारी से पीड़ित था — एक ऐसी बीमारी जो वज्र के समान प्रहार करती थी और गर्मियों की आंधी जैसे तेजी से लुप्त हो जाती थी.

इसके बारे में कोई पक्का नहीं कह सकता है. लेकिन उसने अपने नए घर में पहले से कहीं ज्यादा मेहनत की. "मैं हर दिन एक नई तस्वीर पेंट कर रहा हूं," उन्होंने थियो से कहा. "मैं एक भी पल बर्बाद नहीं करता हूँ."



डॉ. गचत मेरे लिए पिता के समान हैं. वह मेरे काम की प्रशंसा करते हैं, और वो चाहते हैं कि मैं उनके चेहरे को चित्रित करूं. मैं उन्हें दयालु और विचारशील बनाऊंगा, और उनसे उनकी पसंदीदा टोपी पहनने को कहूंगा."

जब थियो और जोहाना ने अपने बेटे के साथ औवर्स का दौरा किया, तो विन्सेंट उन्हें स्टेशन पर एक अनमोल भेंट के साथ आकर मिला. "यहाँ!" उसने रोते हुए कहा, "मेरे पसंदीदा भतीजे के लिए एक पक्षी का घोंसला है." और फिर वो छोटे विन्सेंट को डॉ. गचत के बगीचे में ले गया. वहां पर एक भयंकर मुर्गे ने छोटे लड़के को रोने को मज़बूर किया.





अब दुबारा चीजें फिर से नियंत्रण से बाहर होने लगीं. "मेरा दिमाग घूम रहा है!" विन्सेंट ने थियो और जोहाना को लिखा. "कृपया आएँ और मुझे जल्द आकर देखें." लेकिन वे व्यस्त थे, और थियो भी बीमार था.

"तो अब मुझे पहले से ज्यादा मेहनत करनी होगी," विन्सेंट ने खुद से कहा. "मुझे हर खाली पल भरना चाहिए." इसलिए उसे जब भी मौका मिलता वो बाहर बैठकर औवर के गेहूं के खेतों की पेंटिंग करता था.

"यहां आसमान गहरे सिलेटी रंग का है," विन्सेंट ने अपने परिवार को लिखा. वो आरलेज़ की धूप और साफ रोशनी से वंचित था और यहाँ उसकी उदासी बादलों की तरह बढ़ती गई. यहां जब उसने स्थानीय चर्च को पेंट किया, तब भी उनके रंग गहरे और उदास थे.

अंत में, वह और नहीं झेल सका. वह शहर से होकर एक मक्का के खेत में पहुँचा, और वहां उसने खुद को पेट में गोली मार ली. वह एकदम नहीं मरा. उसे उसके बेडरूम में ले जाया गया और दो भयानक दिनों के लिए उसे वहाँ रखा गया. वह थियो की बाहों में मरा, और उसके कपड़ों में एक आखिरी पत्र मिला.

"अच्छा ... " उसने लिखा, " मुझे लगता है कि मैं अपने काम के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहा हूं .... "



विन्सेंट ने अपनी पेंटिंग्स को सब कुछ दिया और उसकी सबसे प्रसिद्ध तस्वीरों में से एक है - "व्हॉट्सफील्ड विद क्रोज" (गेहूं के खेत, कौओं के साथ" - जो उसकी आखिरी पेंटिंग भी है. पीली घास हवा में झुकती है, और अंधेरे पंख एक उभरते आकाश के नीचे झपटते हैं.

जब उनका जीवन समाप्त हुआ तब विन्सेंट केवल 37 वर्ष के थे. थियो की मृत्यु उनसे केवल छह महीने बाद हुई.



दोनों भाइयों को पास-पास दफनाया गया, फिर भी उनके नाम जीवित हैं. जोहाना ने उनके बारे में कई प्रेम कहानियां लिखीं, उनके एक-दूसरे को लिखे प्रेम पत्रों में; और सबसे बढ़कर, विन्सेंट की चकाचौंध और नाटकीय पेंटिंग्स में जो अब दुनिया भर की आर्ट गैलरीज में लटकी हैं.





विन्सेंट के कई पुराने दोस्त उनके अंतिम संस्कार में शामिल हुए,
जिनमें पेरिस के कलाकार भी शामिल थे,
जिन्होंने उनकी कब्र पर सूरजमुखी के फूल बिछाए.
जिस आदमी ने उनकी पेंटिंग्स को उनके भाई के पलंग के नीचे देखा,
वे अब दुनिया के सबसे अच्छे कलाकारों में से एक हैं. उनकी अनचाही
पेंटिंग्स अब दुनिया भर में लाखों डॉलर में बिकती हैं और उनकी दृष्टि
और उनके खुशहाल सूरजमुखी से दुनिया रोशन होती है.

विन्सेंट वैन गॉग की विरासत

विन्सेंट की मृत्यु के बाद जोहना ने उनके पत्रों और उनकी तस्वीरों को देखा और संभाला. उसे यकीन था कि दुनिया एक दिन उसकी महानता को पहचानेगी- और वह बिल्कुल सही थीं. बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में, विन्सेंट का नाम प्रसिद्ध हो गया, और अंत में उनके चित्रों को "मास्टरपीस" जैसे देखा जाने लगा.

जैसे-जैसे समय बीतता गया, विन्सेंट के काम का स्कूलों और विश्वविद्यालयों में अध्ययन हुआ. उसके असाधारण जीवन पर थिएटर, फिल्मों और टेलीविजन के कार्यक्रम बने. डॉन मैकलेन द्वारा विन्सेंट नामक गीत में भी उसकी प्रतिभा का जश्न मनाया गया.

उनके काम को आज भी सराहा जाता है और उनकी पेंटिंग्स लाखों डॉलर में बिकती हैं. उनके चित्रों का सबसे बड़ा संग्रह एम्स्टर्डम में वान गाग संग्रहालय में देखा जा सकता है. "द येलो चेयर" लंदन की नेशनल गैलरी में है.

आप हर जगह आर्ट गैलरीज और उपहार की दुकानों में उनके चित्रों की प्रतियां भी खरीद सकते हैं. शायद उनकी सबसे लोकप्रिय पेंटिंग सूरजमुखी के फूल हैं, जब वे आरलेज़ में "यलो हाउस" में आशा से भरे थे.

समय-रेखा

1853 मार्च 30 विन्सेंट का जन्म नीदरलैंड में ग्रोनॉट ज़ंदरट में थियोड्रस वैन गॉग और अन्ना कार्नेलिया कार्बस से हुआ.

I857 1 मई, थियो वैन गॉग का जन्म हुआ है.

1869 विन्सेंट ने हेग और नीदरलैंड में कला डीलरों, गौपाल एंड संस के लिए काम करना शुरू किया.

1872 थिओ को विन्सेंट ने पत्र लिखना शुरू किये.

1873 विन्सेंट को लंदन में काम करने के लिए भेजा गया.

1876 गौपाल एंड संस की नौकरी को छोड़ दिया.

1877 एम्स्टर्डम में धर्म का अध्ययन.

1878 यात्रा करने के लिए बेल्जियम के बोरिनज की यात्रा.

1880 पेंटिंग शुरू की.

1885 पेंटिंग "द पोटैटो ईटर्स".

1886 जनवरी, एंटवर्प में कला का संक्षिप्त अध्ययन.

फरवरी में, विन्सेंट थियो के साथ रहने के लिए पेरिस गया.

थियो उसे "इम्प्रेशनिस्ट" आर्टिस्ट्स की प्रदर्शनियों में ले गया.

1888 विन्सेंट ने आरलेज़ की यात्रा की. "यलो हाउस" में रहा. पॉल गागुइन विन्सेंट के साथ रहा. विन्सेंट और गागुइन के बीच झगड़ा.

विन्सेंट ने अपने ही कान को चाकू से काटा.

1889 विन्सेंट ने अपने सबसे प्रसिद्ध "सूरजमुखी" पेंटिंग को पूरा किया.

थियो ने जोहाना बोंगर से शादी की.

1890 जुलाई 29, थियो की बाहों में विन्सेंट की मृत्यु हुई.

1891 25, जनवरी थियो वैन गॉग की मृत्यु.

विन्सेंट वॉन गॉग

विन्सेंट वैन गॉग को पेंट करना बहुत पसंद था. पर किसी को भी उनकी पेंटिंग पसंद नहीं थी. उनके दिल में इच्छा थी कि उनकी तस्वीरें लोकप्रिय हों, लेकिन विन्सेंट के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात पेंट करना था. और उन्होंने खूब पेंट किया. उन्होंने गेहूं के खेतों और पेड़ों से लेकर चमकीले पीले सूरजमुखी तक सब कुछ पेंट किये ....

वान गाग एक उत्कृष्ट कलाकार थे. वो दुनिया के सबसे प्रसिद्ध चित्रकारों में से एक बन गए. आज, उनके चित्रों को उत्कृष्ट कृतियों (मास्टरपीस) के रूप में देखा जाता है और लाखों डॉलर में बेचा जाता है. यह किताब उनकी कहानी बयां करती है.